अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

ई-संस्करण

अंक : 3

जुलाई 2023

आंदोलन की ताकत समर्पित कार्यकर्ता

वर्ष: 68 अंक: 10

जुलाई 2023

संपादक
संचय जैन

सह संपादक
मोहन मंगलम

क्रिएटिव्स
आशुतोष रॉय

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

पेज सेटिंग
मनीष सोनी

ई-संस्करण
विवेक अग्रवाल

प्रकाशन मंत्री
देवेन्द्र डागलिया

पत्रिका प्रसार संयोजक
सुरेन्द्र नाहटा

हमारा देश जातिवाद के जाल में फँसा है। जाति का महत्व अपनी जगह पर है, मनुष्य का महत्व उससे बड़ा है। आज देश के नागरिकों को जरूरत है मानव को मानव समझने की। अणुव्रत आंदोलन जो कि आचार्य श्री तुलसीजी द्वारा चलाया गया, वह कहता है कि मानव को मानव समझो। इसके छोटे-छोटे नियम देश के चरित्र की नींव को मजबूत बनाएँगे।

- नीलम संजीव रेड्डी

अध्यक्ष : **अविनाश नाहर**
महामंत्री : **भीखम सुराणा**
कोषाध्यक्ष : **राकेश बरड़िया**

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 2.
दूरभाष : 011-23233345
मोबाइल : 9116634512

www.anuvibha.org
anuvrat.patrika@anuvibha.org

अणुव्रत कार्यकर्ता एक विशिष्ट भूमिका में

प्रत्येक इंसान इस दुनिया में अपनी एक विशिष्ट भूमिका निभाता है। कुछ भूमिकाएं नियति हमें सौंपती है किन्तु, कुछ भूमिकाएं हम स्वयं अपने लिए चुनते हैं। नियति द्वारा निर्धारित भूमिका के साथ-साथ स्व-प्रेरित भूमिका हमारे व्यक्तित्व और कर्तृत्व को बखूबी प्रतिबिंबित करती है।

दुनिया में कई उदाहरण हैं जहाँ व्यक्ति ने स्व-प्रेरित भूमिका को निभाते हुए महानता को प्राप्त किया है। इंसान अपना भाग्य स्वयं लिख सकता है - यह उक्ति मानव विकास के इतिहास में इसीलिए सबसे अधिक प्रभाव रखती है।

मैंने और अणुविभा व अणुव्रत समितियों से जुड़े हजारों कार्यकर्ताओं ने 'अणुव्रत कार्यकर्ता' के रूप में अपनी भूमिका का चुनाव खुद किया है। हमें गौरव है कि यह भूमिका व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को बेहतर बनाने की है।

हाल ही में देशभर में कार्यरत अणुव्रत समितियों में आगामी दो वर्षीय कार्यकाल के लिए नयी कार्यकारिणी में नये कार्यकर्ताओं को नयी जिम्मेदारी प्राप्त हुई है। हर कार्यकर्ता अपनी भूमिका के प्रति मन में गौरव की अनुभूति के साथ मैदान में उतर कर अपने व्यक्तित्व व कर्तृत्व के माध्यम से अणुव्रत जीवनशैली का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करे, यह काम्य है।

अणुव्रत अमृत महोत्सव के ऐतिहासिक दौर में सभी अणुव्रत सेनानियों का स्वागत, अभिनन्दन और सफलता की हार्दिक शुभकामनाएं!

- संचय जैन
sanchay_avb@yahoo.com

कार्यकर्ता की कसौटी

■ आचार्य तुलसी

कार्यकर्ता का जीवन व्यक्तिगत जीवन नहीं होता। उसका जीवन दूसरों से जुड़ा हुआ है, अतः उसके जीवन के सूत्र भी दूसरों से अनुस्यूत होते हैं। उसके जीवन में जो अच्छाइयां और बुराइयां होती हैं, उन दोनों का व्यापक प्रभाव पड़ता है। प्रभावशील व्यक्ति का दायित्व होता है कि वह अपने जीवन को अनुशासित रखे। व्यक्ति का जीवन जितना अनुशासित होगा, उसके कार्यक्षेत्र में उतना ही अच्छा प्रभाव होगा। अनुशासित जीवन की पहली शर्त है प्रामाणिकता।

प्रामाणिकता से व्यावहारिक पक्ष जितना स्वस्थ होता है, उससे भी अधिक आंतरिक पक्ष प्रभावित होता है। अनुशासनहीनता के दुष्प्रभाव से बचने के लिए प्रामाणिक जीवन जीने का व्रत हर क्षेत्र में आवश्यक है।

कार्यकर्ता में स्वार्थ-बुद्धि और बड़प्पन की आकांक्षा वांछनीय नहीं है। जिन लोगों में अज्ञान या परिस्थितिवश ऐसी वृत्तियां पनपने लगें, उनके लिए विशेष नियंत्रण की अपेक्षा रहती है। इस दृष्टि से लेनिन का यह अभिमत रहा कि प्रथम श्रेणी के व्यक्तियों को चुनाव में नहीं जाना चाहिए। महात्मा गांधी भी इसी सिद्धांत के प्रतिपादक थे। सत्ता में जाने के बाद व्यक्ति बंध जाता है। बंधा हुआ व्यक्ति महत्वाकांक्षा से निरपेक्ष नहीं रह पाता। इसलिए प्रारम्भ से ही इस ओर ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

अणुव्रत की दिशा सूचना यह है कि कोई भी कार्यकर्ता सेवा-भावना से रहित स्वार्थ और नाम की भावना से पद ग्रहण नहीं करेगा।

निष्ठाशील कार्यकर्ता को मानसिक उदारता और असंकीर्ण दृष्टिकोण से विग्रह और मन-भेद की दरारों को पाटकर सौहार्दपूर्ण भूमिका का निर्माण करना चाहिए।

इस प्रकार की निःस्वार्थ वृत्ति का निर्माण कठिन काम है। इस विषय में लाओत्से का चिन्तन बहुत स्पष्ट है। वह मानता है कि जब तक समाज के मूल्यांकन और मानदण्ड सत्तारूढ़ व्यक्ति को महत्व देते हैं, जब तक सेवा को महत्व देने का दृष्टिकोण निर्मित नहीं होता है, तब तक यह आशा और आकांक्षा रखना कि व्यक्ति स्वार्थ और नाम की भावना से ऊपर उठ जाये, निरर्थक प्रयत्न है। अपेक्षा इस बात की है कि सामाजिक मानदण्ड में परिष्कार हो।

शासन पद्धति जनतंत्रीय हो या एकतंत्रीय, विचार-भेद मानव स्वभाव की अनिवार्य क्रिया है। वहीं, मन-भेद एक बुराई है क्योंकि इसमें व्यक्ति अपने प्रतिद्वन्द्वी को विकृत रूप में देखता है। वह अपने हितों को ही महत्व देता है। दूसरे व्यक्ति के विशिष्ट गुण उसे अवगुण के रूप में दिखायी देते हैं। ऐसी मनःस्थिति वाला व्यक्ति सार्वजनिक क्षेत्र में व्यापक दृष्टि से कोई काम कर सके, यह संभव नहीं है। इसलिए निष्ठाशील कार्यकर्ता को मानसिक उदारता और असंकीर्ण दृष्टिकोण से विग्रह और मन-भेद की दरारों को पाटकर सौहार्दपूर्ण भूमिका का निर्माण करने में संलग्न रहना चाहिए।

कार्यकर्ता के लिए किसी भी क्षेत्र में बंधने की अपेक्षा नहीं है, फिर भी वह अपनी सुविधा और चिन्तन के आधार पर कुछ सीमाओं को स्वीकार करता है। कार्यकर्ता किसी संस्था का संचालन करे या किसी दल का प्रतिनिधि बनकर चुनाव लड़े किन्तु चुनाव सम्बन्धी आचार संहिता का पालन आवश्यक

है। कार्यकर्ता चाहे मतदाता हो, चाहे उम्मीदवार हो, वह आचार संहिता की अवहेलना करके सफल कार्यकर्ता नहीं बन सकता।

किसी भी बुराई का प्रतिकार दो प्रकार से होता है – हिंसक और अहिंसक। कार्यकर्ता का कर्त्तव्य है कि बुराई का प्रतिरोध अहिंसात्मक पद्धति से करे। अहिंसक प्रतिरोध के कुछ प्रयोग गांधीजी ने किये थे, उनमें असहयोग, सविनय अवज्ञा आदि मुख्य हैं। कार्यकर्ता स्वयं बुराई को अस्वीकार करे और जन-जन को उचित मार्गदर्शन दे तो अहिंसक गतिविधियां व्यावहारिक धरातल पर कार्यकर हो सकती हैं।

कार्यकर्ता असंभव को भी संभव कर देता है, इसलिए उसके सामने असंभव का प्रश्न ही नहीं उठाना चाहिए।

कार्यकर्ता असंभव को भी संभव कर देता है, इसलिए उसके सामने असंभव का प्रश्न ही नहीं उठाना चाहिए। समय की नियमितता हर क्षेत्र में आवश्यक है। कार्यकर्ता के लिए यह प्रामाणिकता का अनिवार्य अंग है। इस विषय में जागरूक रहने वाले आदर्श कार्यकर्ता बन सकते हैं।

कार्यकर्ता का विश्वास मानवीय मूल्यों से भिन्न मूल्यों में नहीं हो सकता, इसलिए उसे एक निष्ठाशील अणुव्रती होना चाहिए। संक्षेप में कुछ सूत्रों का निर्देश मैं यहाँ कर रहा हूँ जो कार्यकर्ता की योग्यता को प्रमाणित करने वाले हैं –

- प्रामाणिकता
- अनासक्ति
- उदार दृष्टिकोण
- सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध
- अहिंसा में विश्वास
- कर्त्तव्य-निष्ठा
- समय की नियमितता

उक्त मूल्यों को जीवन में प्रतिष्ठित करने वाले व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में सच्चे कार्यकर्ता बन सकते हैं। उनका कर्तृत्व उनकी अपनी हित-सिद्धि में नहीं, समाज और राष्ट्र के अभ्युदय में अधिक उजागर हो सकता है।

अणुव्रत यात्रा

सद्भावना ■ नैतिकता ■ नशामुक्ति

अणुव्रत अनुशास्ता जन-जन को दिखा रहे नैतिकता की राह, करा रहे नशामुक्ति का संकल्प

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तन का 75वाँ वर्ष अणुव्रत अमृत महोत्सव के रूप में देश-विदेश में मनाया जा रहा है। अणुव्रत अनुशास्ता के नेतृत्व में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के उद्देश्यों को लक्षित अणुव्रत यात्रा जन-जन को अणुव्रत के दर्शन से परिचित कराने के साथ ही सामाजिक समरसता और व्यक्तित्व विकास की दिशा में एक पथदर्शक की भूमिका निभा रही है। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी तथा अणुव्रत समितियों से जुड़े कार्यकर्ता अणुव्रत यात्रा से जुड़कर स्वयं को कृतार्थ मान रहे हैं।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी 21 मई को अपनी अणुव्रत यात्रा के साथ उपासना लायंस इंग्लिश मीडियम स्कूल, वापी पहुँचे। रास्ते में ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किये और आशीर्वाद प्राप्त किया। बोहरा मुस्लिम समुदाय के लोग गुरुदेव के दर्शनार्थ

पहुँचे। यहाँ से आचार्य प्रवर अणुव्रत यात्रा के साथ दादरा नगर हवेली पहुँचे। मार्ग में अनेक स्थानों पर स्वयं आचार्य प्रवर ने लोगों को सद्भाव, नैतिकता और नशामुक्ति का संदेश दिया।

रास्ते में खानोड कॉलोनी, वापी में कॉलेज के विद्यर्थियों ने गुरुदेव के दर्शन किये और आशीर्वाद प्राप्त किया। दादरा प्रवेश पर मंगलम कॉलोनी में मजदूरों और नागरिकों ने आचार्य श्री के दर्शन करके आशीर्वाद प्राप्त किया। प्रवचन के दौरान सिख समुदाय के लोगों ने गुरुदेव का स्वागत किया और दर्शन लाभ लिया। आचार्य श्री महाश्रमण जी अपनी अणुव्रत यात्रा को लेकर सिलवासा पहुँचे। सिलवासा चौकड़ी पर दिहाड़ी मजदूरों ने पूज्यप्रवर का आशीर्वाद और दर्शन लाभ लिया। प्रवचन के दौरान सिलवासा कलेक्टर भानुप्रभा, डीवाईएसपी सिद्धार्थ जैन, नगर परिषद् अध्यक्ष राकेश चौहान, विश्व हिंदू परिषद्, बजरंग दल, सिख समुदाय, राजपूत समुदाय, मराठा समुदाय, दिगम्बर और स्थानकवासी समुदाय के प्रतिनिधियों को अणुव्रत पट्ट और खेस पहनाकर सम्मानित किया गया।

यहाँ से चलकर आचार्य प्रवर अपनी धवल सेना के साथ अणुव्रत यात्रा को लेकर भिलाड़ पहुँचे। रास्ते में झण्डा

चौक और अथाल गाँव में ग्रामीणों और मजदूरों को आचार्य प्रवर ने आशीर्वाद प्रदान किया व जीवन में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति अपनाने की प्रेरणा दी। अनेक स्थानों पर मुनिश्री सुधांशु कुमार, मुनिश्री अनुशासन कुमार का मार्गदर्शन लोगों को प्राप्त हुआ और लोगों ने संकल्प ग्रहण किये।

स्वामी नारायण गुरुकुल, भीलड़ में आचार्य श्री के प्रवचन के दौरान स्वामी संत स्वरूपदास और भिलाड़ विधायक रमण भाई पाटकर ने अणुव्रत यात्रा को मानवता के हित में बड़ा कदम बताया।

यहाँ से अणुव्रत अनुशास्ता संजान पहुँचे। रास्ते में डहेली और तुंब गाँव में ग्रामीणों और राहगीरों ने परमपूज्य का आशीर्वाद और दर्शन लाभ लिया। स्वागत समारोह में श्री एस.जी. डाकले सार्वजानिक विद्यालय, संजान के ट्रस्टी आनंद कुमार मगन लाल डाकले का अणुव्रत पट्ट एवं खेस पहनाकर अणुविभा कार्यकर्ताओं ने सम्मान किया। यहाँ से आचार्य श्री महाश्रमण ने उमरगाम के बाद घोलवाड़ पहुँचने के साथ ही महाराष्ट्र में प्रवेश किया।

यहाँ से दहानु जाने के दौरान रास्ते में कासपाड़ा और वाकी (सारलीपाड़ा) में आदिवासी समुदाय के लोगों ने गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त किया।

अणुव्रत यात्रा के साथ चल रहे अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर और जस्टिस गौतम चौरड़िया ने देहानु विधायक विनोद प्रसाद का अणुव्रत पट्ट एवं खेस पहनाकर सम्मान किया।

आचार्य श्री नवापाड़ा, वांगांव, भारतनगर होते हुए बोइसर पहुँचे। आचार्य महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउंडेशन कॉलेज, कांबलगांव में अणुव्रत समिति, बोइसर के अध्यक्ष गणेश नांद्रेचा और अणुविभा कार्यकर्ताओं ने खेराफाटक में ग्रामीणों और प्रवासी मजदूरों को

ज्ञानवर्धक डॉक्यूमेंट्री फिल्म दिखायी तथा अणुव्रत संकल्प लेने के लिए प्रेरित किया।

यहाँ से प्रस्थान कर आचार्य प्रवर पालघर, केलवा रोड, सफाले, पारगाँव, दारशेत, उमरपाड़ा, शिरगांव (विरार) पहुँचे। यहाँ प्रवचन के दौरान अणुविभा कार्यकर्ताओं ने विष्णु वामन ठाकुर चौरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष हितेंद्र ठाकुर तथा वसई, विरार महानगरपालिका की प्रथम महिला महापौर प्रवीणा हितेंद्र ठाकुर और सभापति यज्ञेश्वर पाटिल का सम्मान किया।

विरार सिटी में गणेश मंदिर के पास स्कूली बच्चों ने गुरुदेव के दर्शन किये। गुरुदेव ने बच्चों को नशे से दूर रहने का संकल्प दिलाया।

अणुव्रत अनुशास्ता नालासोपारा (पालघर), वसई, जुचंद्र, लोढ़ाधाम, मीरा रोड होते हुए विट्ठी इंटरनेशनल स्कूल, मलाड पहुँचे। स्कूल के ट्रस्टी विनय शाह और पूर्व महापौर संजीव नायक को अणुव्रत पट्ट, खेस, कैलेंडर और घड़ी प्रदान कर सम्मानित किया गया।

अणुव्रत यात्रा में अणुव्रत वाहिनी के साथ अणुविभा के कर्मठ एवं परिश्रमी कार्यकर्ता राकेश मौर्य, जगदीश बैरवा व शंकर शेखावत ने दिन-रात की मेहनत से सेवाभावना का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है।

विद्यार्थियों को नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति की प्रेरणा प्रदान करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के प्रेरणादायी वचन सुनने के लिए वीडियो पर क्लिक करें :

अणुव्रत की चेतना हो

रचयिता : साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा

अणुव्रत की चेतना हो विश्व का आधार।
उच्च हो आचार सबका, हो विमल व्यवहार।।

अणुव्रत का घोष है अच्छा बने इंसान,
छोड़ हिंसा अहिंसा का करें सब सम्मान,
सद्गुणों की सुरभि से सुरभित बने संसार।
अणुव्रत की चेतना हो...

अणुव्रत का घोष है हो व्यसनमुक्त समाज,
झोंपड़ी से महल तक पहुँचे यही आवाज,
स्वस्थ तन हो, स्वस्थ मन हो, भाव हो अविकार।
अणुव्रत की चेतना हो...

अणुव्रत का घोष है नैतिक बने जीवन,
सत्य के पथ पर चलें, संकल्प हो पावन,
शान्ति का संदेश ही है धर्म का उपहार।
अणुव्रत की चेतना हो...

'संयम: खलु जीवनम्' अणुव्रत का है यह घोष,
संयमी हों वृत्तियाँ, मन को मिलेगा तोष,
हृदय में होगा स्वत: ही स्फूर्ति का संचार।
अणुव्रत की चेतना हो...

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी द्वारा रचित इस अणुव्रत गीत को अपनी सुरीली आवाज में गाया है ऋषि दुगड़ ने। सुनने के लिए वीडियो पर क्लिक करें..

■ आलेख ■

संयम और अजीवकाय संयम

डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई

अहिंसा और संयम सहवर्ती गुण हैं। उत्तराध्ययन सूत्र में भगवान महावीर कहते हैं –

वरं मे अप्पा दंतो, संजमेण तवेण य।
माहं परेहि दम्मंतो, बंधणेहि वहेणि य।।

अर्थात् व्यक्ति वध और बंधन द्वारा दूसरों का दमन करता है। इससे तो अच्छा है, वह संयम और तप के द्वारा स्वयं का ही दमन करे।

अर्थशास्त्रीय दृष्टि से देखें तो संयम मूलतः व्यष्टिगत नियमों और हितों की व्याख्या करता है, जिनके विवेकसम्मत अनुपालन से समष्टिगत अर्थशास्त्र के उद्देश्य आधारभूत तरीकों से पूरे किये जा सकते हैं। संयम अपव्यय के सारे द्वारों को रोक देता है तथा जीवन के समस्त व्यवहारों में विवेक और अनुशासन पैदा करता है।

संयम से संपन्नता

एक व्यक्ति की मामूली आय है, परंतु उसकी जीवनशैली संयमित है तो वह फिजूल खर्च नहीं करता है। मौज-शौक और व्यसनों से दूर रहता है। धीरे-धीरे वह सम्पन्नता की ओर बढ़ता चला जाता है। वह आर्थिक दृष्टि से तो सम्पन्न बनता ही है, वैचारिक व नैतिक दृष्टि से भी सम्पन्न बनता है। वहीं, एक अन्य व्यक्ति जिसकी आय काफी अच्छी है, परंतु यदि वह व्यसनी और विलासी है तो पर्याप्त अर्जन करते हुए भी विपन्न बना रहता है। उसकी निर्धनता उसे अन्य कई सुखों और मान-सम्मान से वंचित कर देती है।

संयम के प्रकार

आगम ग्रंथों में संयम के अनेक प्रकार बताये गये हैं। स्थानांग सूत्र में संयम के चार प्रकार बताये गये हैं- मन, वचन, शरीर, एवं उपकरणों का अथवा अजीवकाय संयम।

अजीवकाय संयम

जीव-संयम में अहिंसा की प्रत्यक्ष आराधना जुड़ी है, लेकिन भगवान महावीर ने निर्जीव वस्तुओं के संयम की बात कहकर अहिंसा को और अधिक गहराई प्रदान की। जो वस्तुएँ, उपकरण आदि हमारे इर्द-गिर्द हैं, उनकी उपस्थिति और अवस्थिति किसी व्यवस्था के क्रम में है। उनकी स्वाभाविक अवस्थिति भंग करना अथवा इन चीजों का दुरुपयोग करना हिंसा है, असंयम है।

हमारे उपयोग की वस्तुओं को अस्त-व्यस्त रखना, उनकी सार-संभाल और प्रतिलेखना में प्रमाद करना भी असंयम है। व्यक्ति को यह विवेक रखना चाहिए कि उसके उपयोग, स्वामित्व, अधिकार क्षेत्र या निश्रा की वस्तुएँ जीव-हिंसा का कारण नहीं बनें। यहां तक कि खराब वस्तुओं तथा कचरे का विसर्जन भी विवेकसम्मत होना चाहिए, जिससे प्रदूषण और हिंसा नहीं हो अथवा अल्पतम हो।

हमारे काम में आने वाली निर्जीव वस्तुओं के निर्माण में स्थावर जीवों की विराधना प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती है और प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से त्रस जीवों की विराधना भी जुड़ी होती है। दुरुपयोग या अनावश्यक उपयोग के फलस्वरूप वस्तु के पुनर्निर्माण के लिए जीवों की विराधना होगी, प्रकृति का अधिक दोहन होगा और पर्यावरण पर अतिरिक्त भार पड़ेगा। अधिकता या अज्ञान के कारण यदि कोई व्यक्ति किसी वस्तु का दुरुपयोग करता है तो कोई जरूरतमंद उससे वंचित होता है।

मौजूदा दौर में 'यूज एंड थ्रो' की अनार्थिक बाजार नीति को अपनाने से उपभोक्ता का व्यवहार काफी असंयमित और अपव्ययकारी हो गया है।

उपभोक्ता के व्यवहार का आर्थिक-सामाजिक गतिविधियों तथा पर्यावरण पर प्रत्यक्ष व परोक्ष प्रभाव पड़ता है। असंयम प्रदूषण का कारण बनता है। प्रदूषण न सिर्फ जीवधारियों को, अपितु सम्पत्ति, भवन और अजीव सृष्टि को भी दुष्प्रभावित करता है।

जीव-मण्डल और पारिस्थितिकी में असन्तुलन, जलवायु परिवर्तन तथा ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को बढ़ाने में हिंसा, असंयम और अपव्यय मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं।

मौजूदा दौर में 'यूज एंड थ्रो' यानी प्रयोग करो और फेंको' की अनार्थिक बाजार नीति को बिना सोचे-समझे अपनाया जा रहा है। इससे उपभोक्ता का व्यवहार काफी असंयमित और अपव्ययकारी हो गया है।

अजीवकाय संयम व्यक्तिगत, सार्वजनिक तथा किसी भी प्रकार की सम्पत्ति के दुरुपयोग पर स्वैच्छिक अंकुश का अनमोल सूत्र है। यह सूत्र हर वस्तु के विवेकसम्मत उपयोग की प्रेरणा देता है।

बिजूका

भगवती प्रसाद द्विवेदी, पटना

इदरीस सीमा पर पहरा दे रहा था। पूरी चुस्ती-फुर्ती और मुस्तैदी के साथ। सामने के खेत में एक बिजूका खड़ा था। तने हुए लकड़ी के हाथ-पाँव। माथे पर औंधी पड़ी काली हांडी। हांडी पर चूने का टीका। बदन पर फटा-चिटा, काला-कलूटा झिंगोला। कुल मिलाकर एक दैत्याकार सूरत। मगर खेत में खड़ी हरी-भरी फसल का सच्चा रखवाला। वह फसल को नुकसान पहुँचाने वाले पशु-पक्षियों को हड़काये रखता था। क्या मजाल कि कोई जीव-जन्तु पास फटके! बिजूके पर नजर पड़ते ही माल-मवेशी, चिरई-चुरंग उसे जीता-जागता दानव समझ भाग खड़े होते थे।

सैनिक इदरीस वह दृश्य देख अपनी हँसी रोक नहीं पाता था। बिजूका उसे अपना दोस्त दिखायी देता था। गाहे-बेगाहे उसका मन बहलाता रहता था। अपनी निर्जीवता में भी वह सजीवता का एहसास कराता था।

इदरीस सजीव होकर भी निर्जीव-सा मूर्तिवत खड़ा था। बिजूका बनकर। किसान का दोस्त बिजूका फसल की रखवाली करता था और वह देश की सीमा की। काश! देश की सीमा पर कोई विवाद न होता और वह खुद बिजूके की भूमिका में न होता।

तभी एकाएक ऐसी धूल-भरी आँधी आयी कि बिजूके के लकड़ी के पाँव हिलने लगे और वह धड़ाम-से गिर पड़ा। काली हांडी फूटकर बिखर गयी। इदरीस को लगा जैसे उसका कोई सैनिक साथी हताहत हो गया हो। वह दौड़कर बिजूके को उठाने में तत्पर हो गया।

आखिर क्यों ?

■ **डॉ. मोनिका शर्मा**, मुम्बई

''सुनो निधि बेटा, लड़के वालों ने हाँ कह दी है। फोन आया था अभी। तुम क्या कहती हो? तेरे पापा ने उनसे शाम को फोन करके रिश्ता पक्का करने की बात कही है।''

माँ ने वर्क फ्रॉम होम में व्यस्त बिटिया के दोनों कंधों को थामते हुए कहा और बगल में रखी कुर्सी पर उसके पास ही बैठ गयीं। उसके चेहरे पर भी खुशी झलक आयी और वह बोली– ''सच में माँ! उन लोगों ने रिश्ते के लिए हामी भर ली?''

''हाँ रे, मेरी आत्मनिर्भर, सुंदर, संस्कारी बिटिया के लिए तो हाँ कहना ही था। अब तुम बताओ क्या जवाब दें उन्हें?'' कहते हुए माँ ने अपनी कुर्सी थोड़ी और करीब खींच ली और उसके सिर पर हाथ फेरा।

''हाँ ही कहना है माँ, और क्या? शाम को क्यों, पापा से कहिए अभी कॉल कर दें।'' इतना कहते हुए वह भी खुलकर हँस दी।

रिश्ता पक्का हुआ, उस दिन से निधि की खुशी बस देखते

ही बनती थी। घर-दफ्तर एक होने के इन दिनों में हर पल उसके चेहरे पर दिखती सुख और सुकून भरी सहजता किसी से छुपी न रही। उसकी बातों और जज्बातों में जो खुशी उमड़ रही थी, वह हैरान करने वाली थी।

आज तो दादीजी ने भी टोक ही दिया,''रिश्ता ही हुआ है न। ऐसी भी क्या खुशी कि किसी के सामने लाज-लिहाज ही नहीं? घर छोड़कर जाने की खुशी उसके मुखमंडल से टपकी जाती है। मानो किसी जेल से रिहाई मिल रही हो। ऐसी होती हैं क्या बेटियाँ?''

माँ कहतीं भी क्या? वे तो खुद भी उसके बचपने से हैरान हैं। संयत-सुलझी बिटिया का यह व्यवहार देख कल ही उसके पिता से भी बात की थी। ''आजकल के बच्चे हैं। अब माँ-बाप के घर से पहले जैसा लगाव कम और नयी जिंदगी का चाव ज्यादा दिखता है।'' वे इतना कहकर बात टाल गये।

शाम को माँ चाय लेकर निधि के कमरे में पहुँचीं। उसके बालों को सहलाया और फीकी-सी मुस्कुराहट के साथ बेटी की ओर देखकर बोलीं-''मैं सब समझती हूँ बेटी। यह समय हर बेटी के लिए दुविधा भरा होता है। मन में खुशी भी होती है और अपना आँगन छूटने की पीड़ा भी, पर हर कोई मन में तो नहीं झाँक सकता न?'' ''क्या बात है माँ, किस बारे में बात कर रही हैं आप?'' माँ थोड़ा सकुचाते हुए बोलीं- ''वो.. रिश्ता पक्का होने को लेकर तुम्हारी खुशी देखकर सब हैरान हैं, तो.. !''

वह आगे कुछ कहतीं, इससे पहले निधि ने माँ के दोनों हाथ अपने हाथों में लिये और उनकी आँखों में कहीं गहरे झाँकते हुए छोटी बच्ची की तरह सुबक उठी और बोली, ''मायके का आँगन छूटने का दर्द हर बेटी के मन में होता है माँ, पर मैं रिश्ता पक्का होने से सचमुच खुश हूँ - दिल से। आपने इन दिनों पापा का चेहरा देखा माँ? कितना सुकून दिखता है उनके चेहरे पर। बस! वही सुकून मेरी

शकल पर भी उतर आया है। पापा अब सबसे खिलखिला कर बात करते हैं, वही हँसी मेरी मुस्कुराहट की खनक बन गयी है माँ।'' इतना कहते-कहते उसकी गले तक रुकी रुलाई फूटी और उसने माँ की गोद में अपना मुँह छुपा लिया। बेटी के टप-टप गिरते आँसुओं से माँ का आँचल तो भीगा ही, उसके मन में मौजूद सच्चे लगाव का भाव उनकी भी आँखें गीली कर गया।

निधि ने डबडबायी आँखों से बाहर आँगन में फोन पर बतिया रहे अपने पापा की ओर देखा और बोली - ''बीते पाँच साल पापा ने मेरे लिए रिश्ता खोजने में नहीं, जैसे खुद को खो देने में लगाये हैं माँ। बिटिया के लिए घर-वर मिला या नहीं? कब तक रिश्ता खोजते रहेंगे? सब कुछ मन का कहाँ मिलता है साहब? एक बार उम्र निकल गयी तो? जैसे सवालों के कारण सबसे कतराने लगे थे पापा। मन की न कहने वाले पापा के मन की घुटन कितनी मुखर थी, मैं जानती हूँ माँ। रिश्तेदारों के सामने आने से कतराने लगे थे पापा। खुलकर हँसना भूल गये थे। जैसे शादी लायक बेटी का पिता के घर एक दिन भी और रहना कोई जुर्म हो।''

इतना कहकर निधि ने एक नजर उस दीवार पर डाली जिस पर उसके मेडल और ट्रॉफी से सजी तस्वीरों का

कोलाज टँगा था। अचानक कटु मुस्कराहट उसके चेहरे पर तैर गयी और बेचारगी से माँ की ओर देखते हुए वह बोली, ''कैसी आत्मनिर्भर, सुंदर, संस्कारी बिटिया माँ? मेहनत से पायी काबिलियत और आपके दिये संस्कारों से संवरे व्यक्तित्व के बावजूद पापा को लड़के वालों से थके-माँदे स्वर में ही बतियाते देखा। मुझे चुनकर एहसान कर देने की खबर सुनने की उम्मीद लगाये रहने वाले उनके मन ने कितनी नाउम्मीदी झेली है न! कहाँ किसी परिवार ने हाँ कही अब तक?''

शिकायत भरे लहजे में यह सवाल उठाते हुए उसने माँ के पल्लू से अपने आँसू पोंछे और सधे पर भर्राये स्वर में कहने लगी-''हर बार किसी न किसी परिवार से खुशामद भरा व्यवहार और बातें। जाने कौन कहीं अच्छा रिश्ता बता दे, इस उम्मीद में लोगों की हर बात सह जाना। क्यों माँ? बेटी के पिता के हिस्से यह अनकही-सी मजबूरी क्यों आ जाती है?''

फिर थोड़ा सोचकर बोली- ''नया परिवार, नये रिश्ते, नया माहौल, मैंने तो किसी बात को लेकर कुछ सोचा ही नहीं। आगे का जीवन कैसा होगा? यह तो समय ही बताएगा, पर पापा कई उलझनों से बाहर आ गये। आये दिन उनके मन और मान पर होने वाली चोट बहुत दिल दुखाती थी माँ।'' कहते हुए वह फिर सुबकने लगी।

यह सब सुनकर माँ हैरान थीं कि रिश्ता जोड़ने के लिए देखने-दिखाने की औपचारिकताओं और मेल-मिलाप का यह सफर उनकी बिटिया को भीतर से कितना तोड़ रहा था। रिश्ता तय हो जाने की खुशी में खिलखिलाती-इठलाती बिटिया के भीतर का यह दर्द माँ को भी कचोट गया। एक बेटी के रूप में यही पीड़ा कभी उनके हिस्से भी तो आयी थी। कहने के लिए समय बदल गया, पर आज भी हर बेटी अपने पिता के मान को ठेस पहुँचाने वाली इसी टूटन से जूझती है, आखिर क्यों?

काव्य-रस

हिंसा जीवन का आधार नहीं होती

■ **अशोक रावत**, आगरा ■

हार न माने मन तो कोई हार नहीं होती,
हिम्मत से ऊँची कोई दीवार नहीं होती।

जो तलवार किसी मानव के मन को जीत सके,
इतनी ताक़तवर कोई तलवार नहीं होती।

संकल्पों में होती है जो ताक़त होती है,
पाँवों में या पहियों में रफ़्तार नहीं होती।

भूलों को दुहराना लापरवाही होती है,
भूल अगर होती है, तो दो बार नहीं होती।

जीवन का आधार हमेशा जीवन होता है,
कोई हिंसा जीवन का आधार नहीं होती।

नई पीढ़ी का सर्वांग संतुलित दिशा-दर्शन करने वाली पत्रिका

बच्चों का देश

नौनिहालों को स्वस्थ मनोरंजन के साथ जीवन निर्माण का मार्ग सुझाती है। इस पत्रिका का नवीनतम अंक पढ़ने के लिए पुस्तक पर क्लिक करें..

क्या संयम में छुपा है हर समस्या का समाधान?

जून अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु –

उदात्त जीवन मूल्य सम्पन्न बनाता है संयम

संयम अर्थात् चित्त को कतिपय नियमों में प्रतिबद्ध करना, जिससे स्वविवेक का जागरण हो। मनुष्य अपने हर महत्वपूर्ण निर्णय की प्रक्रिया में सदैव संभ्रम की स्थिति में होता है। ऐसे में संयम की अंतःशक्ति उसे कर्म पथ पर संकल्पित करती है। संयम को अपनाने से मनुष्य उदात्त जीवन मूल्य सम्पन्न होने के साथ ही मानवीय आचार संहिता में अर्पित 'राष्ट्र निधि' हो जाता है।

– **डॉ. राकेश तैलंग**, राजसमंद

संयम सुझाता है हर समस्या का समाधान

कोई समस्या आती है तो संयमशील व्यक्ति उसे निष्प्रभावी बनाकर समाधान मार्ग पर चल देता है। एक शिक्षक होने के नाते कई बार समस्याएं आ जाती हैं। जिस व्यक्ति के कारण समस्या आयी है, मैं उसकी परिस्थिति तथा मन:स्थिति को समझने में संयम का उपयोग करती हूँ। जब हमारी भाषा, शैली, वाणी मैत्रीपूर्ण और सकारात्मक होती है तो समस्या का समाधान देखते ही देखते निकल जाता है। – **डॉ. नीलम जैन**, बीकानेर

संयम ने दी शक्ति, समाप्त हुआ संकट

संयम का अर्थ है धैर्य और नियंत्रण। एक जमाने में मैं आर्थिक समस्याओं से जूझ रहा था, सीमित आय थी और खर्च अधिक। तब मैंने अपने शौक पर नियंत्रण रखा। शनैः शनैः खर्च कम हुए तो सीमित आमदनी में भी अच्छी तरह गुजारा होने लगा। इसके साथ ही मैंने धन कमाने के लिए नैतिक मार्गों का अनुसरण किया जिससे मेरी आर्थिक तंगी दूर हो गयी। संयम ने मुझे नयी शक्ति दी।

– **ताराचंद मकसाने**, नवी मुंबई

संयम रखने वाला कभी दुःखी नहीं होता

पशु-पक्षी तक समझते हैं कि किस समय कौन-सा कार्य करना है। वहीं मनुष्य भले-बुरे की समझ होते हुए भी अनजान बनकर सारे अनैतिक कार्य करता रहता है। आज कोई सुखी नहीं है क्योंकि जीवन संयमी नहीं है। संयम का मतलब है अपनी आवश्यकता से अधिक की आशा नहीं करना। अतः सच्चे सुख की प्राप्ति के लिए संयम अमोघ अस्त्र है। इसको धारण करने वाला कभी दुःखी नहीं हो सकता।

– **पवन पहाड़िया**, नागौर

संयम से आती है सहनशीलता

संयम से इच्छाओं एवं आवश्यकताओं पर अंकुश की क्षमता के साथ ही सहनशीलता, समता, धैर्य, क्षमा जैसे गुणों का विकास होता है। जहां इन गुणों का प्रभाव है, वहां समस्याओं का अभाव निश्चित है। यदि गाहे-बगाहे समस्याएं उत्पन्न हो भी जाती हैं तो संयमित व्यक्ति सहनशीलता रखते हुए तनावमुक्त हो निराकरण की दिशा में कदम बढ़ाने लगता है। जब व्यक्ति तनावमुक्त होता है तो किसी भी कार्य में सफलता शीघ्र अर्जित कर लेता है।

– **मीरा जैन**, उज्जैन

संयम से अच्छा बनता है समाज

जब हमारा मन किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर आकर्षित होता है, उस स्थिति में सही राह को चुनना ही संयम है। आहार-विहार में संयम को अंगीकार करके हम स्वस्थ रह सकते हैं, सुखमय जीवन बिता सकते हैं। हम खुश रहेंगे तो हमारे घर-परिवार में, हमारे आस-पड़ोस में भी खुशहाली रहेगी। खुशहाल व्यक्ति अपने जीवन को संयमित कर एक अच्छे समाज का निर्माण करने में सहभागी बनने के साथ ही समाज को सही दिशा प्रदान कर सकता है। – **बबीता अग्रवाल**, गुवाहाटी

आगामी परिचर्चा का विषय

समाज निर्माण में सिविल सोसायटी की भूमिका

दुनिया के हर कोने में ऐसे सामाजिक संस्थान और कार्यकर्ता सक्रिय हैं जो सामाजिक सरोकारों से जुड़े मुद्दों पर काम करते हैं। आजकल व्यापक सन्दर्भ में इन्हें 'सिविल सोसायटी' के रूप में पहचाना जाता है। सिविल सोसायटी सामाजिक ताने-बाने को संवारने में रचनात्मक भूमिका निभाती है। क्या हैं इस सन्दर्भ में आपके विचार और अनुभव?

'**समाज निर्माण में सिविल सोसायटी की भूमिका**' इस विषय पर सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं। अपने विचार हमें 200 शब्दों में 31 जुलाई तक निम्न व्हाट्सएप नंबर के माध्यम से भेजें। चयनित विचार सितम्बर अंक में प्रकाशित किए जाएँगे।

9116634512

गौरवशाली अतीत के झरोखे से

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष स्वर्णिम इतिहास के असंख्य पन्नों से परिपूर्ण हैं। अणुव्रत अमृत महोत्सव के इस ऐतिहासिक प्रसंग पर इन्हीं में से कुछ पन्ने हम सुधी पाठकों के लिए यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, इस आशा और विश्वास के साथ कि ये संस्मरण हम सब को अणुव्रत-पथ पर कदम दर कदम आगे बढ़ते रहने को प्रेरित करेंगे।

इन संस्मरणों की आधारभूमि है आचार्य तुलसी के जीवनवृत्त पर आधारित एवं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा सम्पादित महाग्रंथ ''मेरा जीवन : मेरा दर्शन।''

पहला अन्तरराष्ट्रीय अहिंसा और विश्व शान्ति सम्मेलन

आचार्य श्री तुलसी के सान्निध्य में जैन विश्व भारती लाडनूं के प्रांगण में 5, 6, 7 दिसम्बर 1988 को पहले अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन हुआ।

सम्मेलन में रूस, अमेरिका, बांग्लादेश, ऑस्ट्रेलिया, जापान, कनाडा, ब्रिटेन, स्वीडन, थाईलैण्ड, हॉलैण्ड आदि अनेक देशों के 100 से अधिक प्रतिनिधि उपस्थित थे। ये सारे प्रतिनिधि अहिंसा और शान्ति के क्षेत्र में काम करने वाली संस्थाओं से सम्बन्धित थे। आचार्य श्री तुलसी ने अपने प्रवचन में अहिंसा के आधारभूत तत्त्वों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि अहिंसा और विश्व शान्ति की दिशा में काम करने वालों को इन तत्त्वों का बोध होना

ही चाहिए। जातीय, साम्प्रदायिक और राष्ट्रीय भेद-रेखाओं के नीचे जो अभेद है, मौलिक एकता है, उसका अनुभव किया जा सकता है। मनुष्य में अच्छाई के बीज हैं, उन्हें अंकुरित किया जा सकता है।

अन्तरराष्ट्रीय अणुव्रत पुरस्कार

6 दिसम्बर। सन् 1987 का पुरस्कार हवाई यूनिवर्सिटी (अमेरिका) के प्रोफेसर ग्लेन डी. पेज को दिया गया। सन् 1988 के पुरस्कार के लिए सोका गकाई इन्टरनेशनल जापान के अध्यक्ष देसाकु इकेड़ा के नाम की घोषणा की गयी। अहिंसा के क्षेत्र में काम करने वाली इस संस्था का सम्बन्ध विश्व के सौ से अधिक राष्ट्रों के साथ है।

सम्मेलन में आचार्य श्री तुलसी ने कहा- वर्तमान युग में अहिंसा, प्रेम और शान्ति की बहुत अपेक्षा है क्योंकि आज मनुष्य जाति, वर्ण, रंग, सम्प्रदाय आदि में विभक्त होता जा रहा है। अणुव्रत इन दीवारों को तोड़ने में सक्रिय है। अणुबम जितना खतरनाक है, अणुव्रत उतना ही बड़ा सुरक्षा कवच है। अहिंसा के क्षेत्र में काम करने वाली सभी संस्थाएं एकजुट होकर शक्तिशाली बनें और अशान्त विश्व को शान्ति का मार्ग दिखाएं। 7 दिसम्बर को समापन सत्र में अनेक प्रतिनिधियों ने विचार व्यक्त किये। सम्मेलन में चौदह देशों के प्रतिनिधि आये।

दूसरा अन्तरराष्ट्रीय अहिंसा शान्ति सम्मेलन

17 से 21 फरवरी 1991 तक राजसमंद में अणुव्रत विश्व भारती के विश्व शान्ति निलयम् के प्रांगण में द्वितीय अन्तरराष्ट्रीय अहिंसा शान्ति सम्मेलन का आयोजन था। विश्व के पच्चीस देशों के चौंसठ एवं भारत के साठ प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया। यू.एन.ओ. की ओर से भारत स्थित उसके सूचना केन्द्र के निदेशक तथा यूनेस्को की ओर से उसके मध्य एशिया के निदेशक ने विश्व के संगठनों का प्रतिनिधित्व किया।

राजसमंद घोषणा पत्र

पाँच दिन के चिन्तन-मंथन के पश्चात् सम्मेलन में ही गठित विशेष समिति ने घोषणा पत्र तैयार किया। उसे राजसमंद घोषणा पत्र का नाम दिया गया। इसमें विशेष रूप से इस बात पर बल दिया गया कि विश्वभर में शिक्षा के साथ अहिंसा प्रशिक्षण को शामिल किया जाये। यह भी निर्णय लिया गया कि घोषणा पत्र यूनेस्को द्वारा विश्व के सभी देशों में भेजा जाएगा। हर देश की भाषा में उसका अनुवाद भी कराया जाएगा।

अणुव्रत जीवनशैली का प्रशिक्षण हो

21 फरवरी को सम्मेलन के समापन समारोह में डॉ. केरोल, डॉ. हर्मन (यू.एस.ए.), सुश्री अमिता (यू.के.), जॉन फिलेण्डर (स्वीडन) आदि प्रतिनिधियों ने अहिंसा के क्षेत्र में काम करने का संकल्प व्यक्त किया।

आचार्य श्री तुलसी ने अपने उद्बोधन में कहा -''मैं चाहता हूँ कि सम्प्रदाय-विहीन धर्म की सृष्टि हो। धर्म के नाम पर साम्प्रदायिक विद्वेष न फैले। यदि धर्म सम्प्रदायमुक्त होगा तो धर्म के नाम पर कभी युद्ध नहीं होगा। अणुव्रत ऐसा ही धर्म है। मानवीय एकता ही अणुव्रत का उद्देश्य है। मैं सभी प्रतिनिधियों से कहना चाहता हूँ कि वे अणुव्रत की जीवनशैली का प्रशिक्षण लें और सही अर्थ में शान्ति का अनुभव करें।''

सम्मेलन के दौरान आचार्य श्री तुलसी का प्रवास साधना शिखर में हुआ। कॉन्फ्रेंस अणुविभा की ऊपरवाली मंजिल पर हुई। वहाँ का दृश्य इतना सुन्दर था कि देखते ही बनता था। कार्यक्रम की सम्पन्नता के बाद आचार्य श्री सब जगह घूमे। अणुविभा के महामंत्री मोहन भाई ने आचार्य श्री को वहाँ चल रहे विकास कार्यों की अवगति दी। आचार्य श्री ने कहा कि काम पूरा होने के बाद अणुविभा का सौन्दर्य और ज्यादा निखरेगा, ऐसा प्रतीत होता है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के मुख्यालय में

राजसमन्द सम्मेलन के पश्चात् सम्मेलन के संयोजक तथा अणुविभा के मंत्री सोहनलालजी गांधी आदि कार्यकर्ताओं का एक शिष्टमंडल संयुक्त राष्ट्रसंघ के न्यूयार्क स्थित मुख्यालय में सचिवालय के अधिशासी श्री वासवर्न से मिला। शिष्टमंडल ने राजसमन्द घोषणा पत्र की एक प्रति उन्हें भेंट की। सोहनजी गांधी ने आचार्य श्री तुलसी के सान्निध्य में चलने वाली प्रवृत्तियों की जानकारी दी तो श्री वासवर्न बोले–‘‘आचार्य तुलसी अणुव्रत के द्वारा अहिंसा को प्रतिष्ठित करने का काम कर रहे हैं।’’

दलाई लामा को विद्या मनीषी की उपाधि

26 नवम्बर 1992। सुधर्मा सभा में समायोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय का लोकार्पण हुआ। श्री दलाई लामा को जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की ओर से सर्वोच्च उपाधि ‘विद्या मनीषी’ की उपाधि प्रदान की गयी।

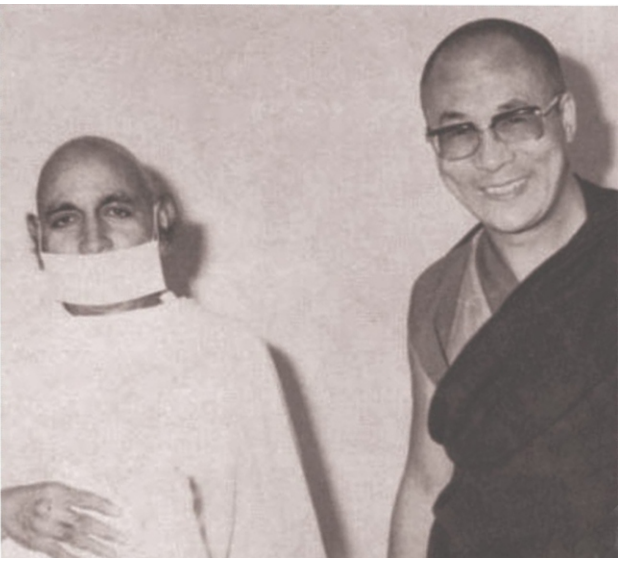

श्री दलाई लामा ने अपने अभिभाषण में कहा–‘‘भारत ही दुनिया का ऐसा देश है, जहां अनेक धर्म, दर्शन और सिद्धान्त होते हुए भी सभी का यथेष्ट सम्मान है और सभी धर्मों से हमें आपसी सद्भाव व मैत्री की शिक्षा मिलती है।’’

हवाई विश्वविद्यालय के डॉ. ग्लेन डी. पेज, मार्टिन लूथर किंग संस्थान, न्यूयार्क के डॉ. बर्नार्ड लफाए, एसोसिएट्स

किंग्स सेंटर, जार्जिया के प्रोफेसर चार्ल्स एल्फीन, संयुक्त राष्ट्रसंघ के शान्ति प्रतिनिधि डॉ. जोहान्स, संगठन की प्रमुख कुमारी रोबिन लुडविन और गुजरात विद्यापीठ के कुलपति डॉ. रामलाल पारीक ने अपने वक्तव्य में विश्व में बढ़ रहे हिंसा के वातावरण को लेकर चिन्ता प्रकट की तथा अहिंसा के माध्यम से समाधान पाने की हिदायतें भी दीं।

उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा–''अहिंसा जीवन की सबसे बड़ी कला है। अहिंसा के बिना मानव जीवन को कल्याणकारी नहीं बनाया जा सकता।''

तीसरा अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन

17 दिसम्बर 1995 को तीसरा अन्तरराष्ट्रीय विश्व शांति और अहिंसा सम्मेलन शुरू हुआ। प्रथम दिन का विषय था – मानव, प्रकृति एवं पर्यावरण के बीच सामंजस्य तथा सन्तुलन। समिति के अतिथि संयुक्त राष्ट्र संघ के उपमहासचिव श्री जोसेफ वर्नर रीड, संयुक्त राष्ट्र संघ के निरूशस्त्रीकरण विशेषज्ञ श्री मैनफ्रिड नोएटजर, रोयल नेपाल अकादमी के कुलपति श्री मदनमणि दीक्षित और आचार्य महाप्रज्ञ के वक्तव्य हुए।

व्यक्ति और विश्व की शान्ति है सापेक्ष

इस अवसर पर आचार्य श्री तुलसी ने प्रवचन में कहा– अहिंसा और शान्ति दो शब्द हैं किन्तु इनका तात्पर्य एक है। प्रत्येक व्यक्ति के मन की शान्ति और विश्व शान्ति, दोनों में एकात्मकता है। इसलिए हम एक व्यक्ति की शान्ति पर विचार करें तो उसका अर्थ होगा कि हम विश्व शान्ति पर विचार कर रहे हैं और विश्व शान्ति पर विचार करने का अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति की शान्ति पर विचार कर रहे हैं।

अणुव्रत समाचार

जनता में रहे शांति, मैत्री व धर्म का प्रभाव : आचार्य श्री महाश्रमण

मुम्बई। 17 जून को गोरेगांव स्थित नेस्को के विशाल ग्राउण्ड में अणुव्रत अनुशास्ता, मानवता के मसीहा, महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण का मुम्बई की जनता द्वारा भव्य नागरिक अभिनंदन समारोह समायोजित किया गया। इसमें महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस, पर्यटन, कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा, कई विधायकों, विभिन्न धर्मगुरुओं, अनेकानेक धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक संगठनों के प्रमुख व्यक्तियों सहित हजारों जनता संभागी बनी।

समारोह में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि दुनिया में मंगल की बात होती है। आदमी स्वयं की मंगलकामना करता है तो दूसरों के प्रति भी मंगलकामना व्यक्त करता है। अहिंसा, संयम और तप रूपी धर्म सबसे उत्तम मंगल है। इनका पालन करना ही धर्म है। जीवन में अहिंसा, संयम और तप के विकास का प्रयास करना चाहिए।

आचार्यश्री ने कहा कि वर्ष 2023 के चतुर्मास के लिए मुम्बई में आना हुआ है। हमारे साथ मुख्यमुनिश्री, साध्वीप्रमुखाजी और साध्वीवर्याजी आदि साधु-साध्वियां भी हैं। मैं समस्त जनता के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना करता हूँ। आचार्यश्री ने कहा कि महानगर की प्रतीकात्मक चाबी को हम अहिंसा, संयम और तप की चाबी मानते हैं। मुम्बईवासियों के जीवन में शांति, मैत्री, सद्भाव, नैतिकता और धर्म का प्रभाव बना रहे।

अणुव्रत अनुशास्ता ने अणुव्रत यात्रा के उद्देश्यों - सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संकल्पों को स्वीकार करने का आह्वान किया तो उपस्थित लोग अपने स्थान पर खड़े होकर कृतसंकल्प बने। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी ने भी जनता को उद्बोधित किया। विभिन्न धर्मगुरुओं, सामाजिक संगठनों एवं डब्बा एसोसिएशन व रिक्शा एसोसिएशन के प्रतिनिधियों ने अणुव्रत दर्शन को वर्तमान समय की आवश्यकता बताते हुए अपना पूर्ण समर्थन देने का विश्वास व्यक्त किया।

नशामुक्त समाज हेतु विशेष अभियान शुरू

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में नशामुक्त व ड्रग्स-मुक्त समाज हेतु अणुविभा के विशेष अभियान का आगाज हुआ। Elevate - Experience the Real High आओ, जिंदगी की बात करें! पंचलाइन के

साथ शुरू हुए इस अभियान के बैनर का लोकार्पण करते हुए महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने कहा कि प्रशासन कितना भी प्रयास करे, आचार्य श्री महाश्रमण जी जैसे राष्ट्रसंत की प्रेरणा से ही नशे जैसी बुराइयों से मुक्त एक स्वस्थ समाज का निर्माण संभव है। उन्होंने अणुव्रत के माध्यम से अच्छे संस्कार और दृढ़ संकल्प से युक्त मानव निर्माण के अभियान की सराहना की।

अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा कि अणुविभा की ओर से मानव मात्र के उत्थान के लिए ड्रग मुक्त समाज बनाने की यह सकारात्मक पहल है। एलिवेट के संयोजकद्वय डॉ. गौतम भंसाली और अशोक कोठारी ने भी विचार रखे। कार्यक्रम में हजारों की तादाद में विभिन्न समाजों और संस्कृतियों के लोगों ने ड्रग मुक्त रहने का संकल्प आत्मीय भाव से स्वीकार किया।

विश्व पर्यावरण दिवस पर वेबिनार

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष में अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन 4 जून को किया गया। इस अवसर पर अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा कि यदि पर्यावरण संरक्षण के लिए हमने एकजुट प्रयास शुरू नहीं किये तो आने वाली पीढ़ियों के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन नहीं कर पाएंगे।

दिल्ली इस्कॉन मंदिर के वाइस प्रेसिडेंट व अंतरराष्ट्रीय पर्यावरणविद् अमोघलीला दास, स्वच्छ भारत मिशन के नेशनल एम्बसेडर डी. पी. शर्मा, आईएसबीएम के प्रोफेसर-डीन, डायरेक्टर बोस इंडस्ट्री एवं मोटिवेशनल

स्पीकर डॉ. टी. के. जैन, सी 5 फाउंडेशन के निदेशक विष्णु पीआर और बीआईआरसी निदेशक, एसोसिएट प्रोफेसर ग्रीन केमिस्ट्री रिसर्च सेंटर, डूंगर कॉलेज के डॉ. नरेंद्र भोजक ने भी विचार व्यक्त किये।

पर्यावरणविद् राजेंद्र सिंह, अणुविभा के निवर्तमान अध्यक्ष संचय जैन के अलावा देशभर की अणुव्रत समितियों के पदाधिकारियों व सदस्यों ने वेबिनार में हिस्सा लिया। इससे पहले अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा ने विषय प्रवर्तन करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। वरिष्ठ उपाध्यक्ष तथा राष्ट्रीय पर्यावरण प्रभारी प्रताप दुगड़ ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

योग दिवस पर देशव्यापी आयोजन

अणुविभा के जीवन विज्ञान विभाग के तत्त्वावधान में अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष में वृहद स्तर पर आयोजन संपन्न हुए। अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर एवं राष्ट्रीय संयोजक रमेश पटवारी के साथ जीवन विज्ञान केंद्रीय टीम के चिन्तन-मंथन के पश्चात् देशभर की अणुव्रत समितियों को कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी।

अणुविभा के संगठन मंत्री, राज्य प्रभारी, जीवन विज्ञान विभाग की उच्च शिक्षा प्रबन्धन प्रभारी डॉ. हंसा संचेती, स्कूल प्रबन्धन प्रभारी ममता श्रीश्रीमाल, ऑनलाइन

प्रशिक्षण प्रभारी रीना सेठी गोयल तथा सहायक निदेशक हनुमान मल शर्मा ने देश भर में अणुव्रत समितियों के माध्यम से सफल कार्यक्रमों की संयोजना की जिससे पहली बार एकरूपता से 47 अणुव्रत समितियों द्वारा 54 स्थानों पर भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ।

कानून मंत्री मेघवाल का अभिनंदन

अणुव्रत संसदीय मंच के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनराम मेघवाल को केन्द्र सरकार में कानून एवं न्याय मंत्री बनाये जाने पर आपके निवास स्थान पर अणुविभा के प्रबंध न्यासी तेजकरण सुराणा, महामंत्री भीखम सुराणा, संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया तथा कार्यसमिति सदस्य बाबूलाल दुगड़ ने अणुव्रत आचार संहिता पट्ट प्रदान कर अभिनंदन किया। मंत्री महोदय ने अणुव्रत आचार संहिता पट्ट अपने मुख्य कक्ष में लगवाया।

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

हमसे जुड़ने के लिए नीचे दिये गये चिह्न को क्लिक करें

अणुव्रत आचार संहिता

- ☐ मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा। आत्म-हत्या नहीं करूँगा। भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।
- ☐ मैं आक्रमण नहीं करूँगा। आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा। विश्व-शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयत्न करूँगा।
- ☐ मैं हिंसात्मक एवं तोड़फोड़-मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।
- ☐ मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा। जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊँच-नीच नहीं मानूँगा। अस्पृश्य नहीं मानूँगा।
- ☐ मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा। साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।
- ☐ मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा। अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा। छलनापूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।
- ☐ मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।
- ☐ मैं चुनाव के संबंध में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।
- ☐ मैं सामाजिक कुरूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।
- ☐ मैं व्यसनमुक्त जीवन जीऊँगा। मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तंबाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।
- ☐ मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा। हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा। पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

उपरोक्त संकल्पों में से सभी या अपने भावानुसार संकल्प लेने के लिए क्लिक करें..

अणुव्रत अनुशास्ताओं के पावन प्रेरणा पाथेय, प्रसिद्ध साहित्यकारों की रचनाओं तथा प्रखर चिंतकों के आलेखों के साथ मासिक 'अणुव्रत' पत्रिका गत 68 वर्षों से अनवरत प्रकाशित हो रही है। 'अणुव्रत' पत्रिका का मुद्रित अंक मंगवाने के लिए आज ही सदस्य बनें।

सदस्यता शुल्क विवरण

वार्षिक	-	₹ 750
त्रैवर्षीय	-	₹ 1800
पंचवर्षीय	-	₹ 3000
दसवर्षीय	-	₹ 6000
योगक्षेमी	-	₹ 15000

बैंक विवरण :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
कैनरा बैंक
A/C No. 0158101120312
IFSC : CNRB0000158

सदस्यता हेतु ऑनलाइन भुगतान के लिए https://rzp.io/l/avbp पर क्लिक करें या इस QR कोड को स्कैन करें

अणुव्रत आंदोलन की प्रतिनिधि संस्था अणुव्रत विश्व भारती के दो प्रकाशन 'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' के बारे में जानकारी के लिए वीडियो पर क्लिक करें :